धर्म जीवन

मार्च – अप्रैल 2005

- ✡ **Pealrs Sublime.....**
  - ✡ **चण्डीगढ़ में माता पिता सम्बंधी सभा**
    - ✡ **हृदय परिवर्तन के दृश्य**
  - ✡ **कल्याण में माता पिता दिवस पर विशेष सत्संग**
- ✡ **Don't Remain Negligent**

PEARLS SUBLIME .....

Proclamations of Bhagwan Devatma freely translated from "*Param Poojniya Bhagwan Devatma ke besh baha vachnon ka gutka*" published in Urdu in 1964.

IN RELATION TO DEVATMA

1. This truth should adequately dawn upon those who thoughtfully study my life that I cannot deviate even infinitesimally for a moment from following the evolutionary laws of nature in my soul even if this earth of ours may shatter into pieces and our sun may set for ever

2. I, being the complete compulsive lover of truth, can never trample upon any truth which dawned upon me, come what may; and being the complete compulsive lover of goodness, I cannot go astray from the path of goodness even if our sun ceases to emit its light and even if our earth slips away from under our feet and gets completely shattered.

3. It is only on receiving the "*Dev Jyoti*", (highest spiritual light) of Devatma that the fit souls get or can get true realization about their respective soul organisms, its diseases, its degradation and dreadful consequences thereof and getting rid of all the above, thereby, evolving higher life in their soul.

4. You cannot degrade me by your any type of persistent viciousness. I cannot inculcate in my life evil colour in your company. Either you will have to imbibe my higher traits or, on remaining compulsive lover of evil, you will have to flee from me after tormenting me and torturing yourself.

5. I have never been abandoning work except during some such serious illness when I did not have the slightest hold over my body. I wish that, even lying on my death bed, I should do whatever good it is possible for me to do in relation to someone or for someone else.

6. To continuously put in strenuous efforts for the realization of my unique life mission or supreme goal even at the point of perishing has remained my foremost aim.

(Continued to the next issues)

References:

1. (Satya Dev Samvad 31.1.33)
2. (Satya Dev Samvad 6.12.32)
3. (Satya Dev Samvad 11.4.33)
4. (Satya Dev Samvad 11.4.33)
5. (Satya Dev Samvad 4.7.33)
6. (Advitiya Tyag, Volume II)

धर्म जीवन

खण्ड 17 अंक 3
मार्च – अप्रैल 2005
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

चण्डीगढ़ में माता पिता सम्बंधी सभा

30 जनवरी 2005 को चण्डीगढ़ में माता पिता सम्बंधी विशेष साधन की सभा 3104, सैक्टर 35 में डाक्टर विनोद जी खेड़ा के घर में की गई। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें लोकल सेवक सेवकाओं के अतिरिक्त खेड़ा साहिब के स्टाफ के 6–7 जन और मोहाली से श्रीमान इन्द्र भूषण जी भण्डारी एडवोकेट भी आकर शामिल हुए। 25–30 के लगभग हाज़री थी। देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई। देवात्मा के दर पर सहाय प्रार्थना की और उसके बाद श्रीमान जगदीश प्रसाद जी कुक्कड़ ने उच्च भावों से भरकर "श्रद्धा भाजन माता पिता जी" नामक भजन का गान किया।

सभापति जी ने बताया कि बेशक मनुष्य ने शान, विज्ञान वा टैक्नौलजी में अथाह उन्नति की है, इसके बावजूद मनुष्य ने सम्बंधों में जीना नहीं सीखा। न ही मनुष्य को इसकी जरूरत अनुभव हुई है। किसी स्कूल, कालिज वा यूनिवर्सिटी में इस विषय पर कोई शिक्षा नहीं दी जाती।

मनुष्य पशुओं से आया है जैसे पशुओं को अपने सम्बंधों के प्रति कोई जाग्रति नहीं और न ही वह किसी के साथ सम्बंध अनुभव करते हैं और उन सम्बंधों के प्रति अपनी जिम्मेदारी अनुभव करते हैं। पशु पक्षी सब आज़ाद हैं और पशु जगत में जंगल का कानून चलता है, ***Take What you can, kill whom you can.*** यह इसलिए है कि पशु अपने भीतर की भूख को ही अनुभव करते हैं और उसको निवारण करने के लिए वह अपने से छोटे पशुओं को मार भी गिराते हैं। यही वृत्ति मनुष्य के भीतर है, यह वृत्ति गहरे स्वार्थ की वृत्ति है। इसी कारण पशुओं की तरह मनुष्य के सम्बंध भी नारकीय हैं।

स्वार्थ ने मनुष्य के दूसरे ज्ञान तो बहुत बढ़ा दिए परन्तु उसको अभी तक चार पक्षों में कोई ज्ञान नहीं न ही कोई ज्ञान पाने की इच्छा और ज़ोरदार है। वह ज्ञान के विशाल भण्डार को रखकर भी दूसरों के गुण, खूबियां व महानता के सम्बंध में अन्धा है। वह अपने उपकारियों व उनके उपकारों को देखने के विचार से अंधा है। वह दूसरों के दु:ख, दर्द व पीड़ा, दूसरों की सुख शान्ति व आराम आदि को देखने के लिहाज से लगभग अंधा है।

सब से बढ़कर वह अपनी नीचताएं, अपनी कमियां व अपने बुरे स्वभाव के प्रति अंधा है। यह उपरोक्त अंधापन मनुष्य को उसके अति गहरे स्वार्थ के कारण अपने सम्बन्धियों के प्रति जाग्रत होने नहीं देता। मैं हूं, यह बात मनुष्य अच्छी तरह जानता है, परन्तु दूसरे भी हैं इस का मनुष्य को अहसास ही नहीं है। इसी कारण मनुष्य सम्बंधों में अभी तक जंगली है।

स्वार्थ रखकर सम्बंध ठीक नहीं रह सकते। मेरा धन, तेरी तनख्वाह, मेरे रुपए, मेरे कपड़े, मेरा कमरा, मेरे ज़ेवर, मेरे बरतन, मेरा सामान, ऐसे विचार रखकर व जोंक की तरह उसके साथ चिपक कर हम न तो अच्छे बेटे बन सकते हैं, न अच्छे माता पिता बन सकते हैं, न ही अच्छे बहन भाई बन सकते हैं, न ही अच्छे पति पत्नि बन सकते हैं, न अच्छे पड़ौसी व अन्य सम्बंधी बन सकते हैं।

सभापति जी ने एक नौजवान विवाहित लड़की की घटना सुनाई कि उसकी ननद का विवाह रखा हुआ था। उस लड़की के पति व देवर दूर दूसरे प्रांत में ठेकेदारी का काम करते थे। किसी कारण विवाह से एक महीना पहले भी वह घर में रुपए न भेज सके। जिस कारण लड़की के सास ससुर बहुत ही फिकरमंद व उदास रहते थे। जैसे जैसे विवाह की तारीख नजदीक आ रही थी, उनकी उदासी बढ़ती ही जा रही थी। उस लड़की को अपनी सांस से बात करके उनकी उदासी का पता लग गया। उस लड़की ने कुछ ही देर बाद अपने एक करीबी भाई के पास जाकर कुछ दिनों के लिए अपनी जरूरत के लिए रुपए के बारे में बताया।

उन्होंने खुशी के साथ 20/30 हजार रुपए उस लड़की को दे दिए। उस लड़की ने अपने घर आकर सारी रकम अपनी सास को दे दी। घर का सारा फिकर व उदासी खत्म हो गई। उन्होंने विवाह का अति जरूरी सामान तैयार करना शुरू कर दिया। उसने अपने सारे जेवर व अपना दूसरा कीमती सामान अपनी सास जी को दे दिया। उस लड़की के ऐसे स्वभाव को देखकर उसके सास ससुर का दिल सदा के लिए जीता गया, उसका ब्यान नहीं हो सकता। विवाह का समय निकल गया। थोड़े समय बाद रुपए आ गए व उसके लिए नए ज़ेवर व कपड़े और बन गए। परन्तु जिस तरह उस लड़की के अच्छे स्वभाव के कारण घर में स्वर्ग बन गया, उसका किसी तरह किसी चीज़ से मुकाबला नहीं किया जा सकता।

माता पिता हमारे लिए अपने आप को कुर्बान कर देते हैं जिस कारण हमारी पालना होती है, हम अपने पैरों पर खड़े होते हैं। मां बाप का बच्चों के सामने कोई स्वार्थ नहीं होता। परन्तु माता पिता के काम आने के लिए बच्चों का स्वार्थ सामने आ जाता है। बच्चे माता पिता की कदर ही खत्म कर देते हैं। बच्चे माता पिता के उपकार ही भूल जाते हैं, उनके दुःख दर्द व मुसीबतें भूल जाते हैं। धरती पर नरक छा जाता है। जब जवान बेटे अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं, कमाने लग जाते हैं, तो उनके माता पिता को वृद्ध आश्रम में जाकर ठिकाना ढूंढना पड़ता है। कितने कितने बेटे भी अपने एक माता पिता को नहीं संभाल पाते।

गुरु महाराज ने फरमाया है कि धर्म जप, पाठ, सिमरन, भजन का नाम नहीं है, धर्म हमारे सम्बंधों में व्यवहार हैं। जिस प्रकार हमारा व्यवहार व सलूक है, वही हमारा धर्म है। अगर हमारे सम्बंध

खराब हैं तो हमारे में धर्म नहीं है, व हमारा जीवन खराब है, बुरा है। अगर हमारे सम्बंधों में मिठास है, परस्पर सेवाकारी हैं, वहां धर्म है। इसके अलावा कोई भी आडम्बर धर्म नहीं।

गुरु महाराज ने फरमाया है कि मनुष्य सब सम्बंधों में माता पिता के साथ भी स्वार्थ से जुड़ता है। जितनी देर यह स्वार्थ पूरा होता रहता है, वह जुड़ा रहता है अर्थात उसका सम्बंध रहता है। जैसे ही स्वार्थ की पूर्ति हटने लगी, सम्बंध टूट जाता है। कई बार तो सम्बंध दुश्मनी में बदल जाता है। जब कोई जन स्वार्थ के सूत्र से जुड़ता है तो सम्बंधों में नरक छा जाता है। जब कोई जन श्रद्धा व सम्मान शुक्रगुजारी व हमदर्दी के उच्च भावों से जुड़ता है तो सम्बंधों में स्वर्ग आ जाता है। सम्बंधों में मिठास व परस्पर मेल स्थापन हो जाता है। गुरु महाराज किस प्रकार अधिकारी आत्माओं के हृदय में उच्च भाव पैदा करते हैं उसका सभापति जी ने उदाहरणों सहित उच्च भावों से भरकर वर्णन किया। बहुत ही सुन्दर, सुहावना व स्वर्गीय वातावरण बन रहा था, कुछ जनों ने अपने भावों का प्रकाश किया जिसका वर्णन इस प्रकार है।

श्रीमान जगदीश प्रसाद जी एडवोकेट:- (आपका हृदय भरा हुआ था, आंखों से आंसू जारी थे) मैंने अपने शराब, मांसाहार, चोरी, जुआ आदि के खराब जीवन द्वारा अपने माता पिता जी को बेहद दुखी किया है व सताया है। उनको बेहद तकलीफ दी है। उनके हृदय को इस प्रकार तड़पाया है कि उसका परिशोध करना भी मेरे लिए सम्भव नहीं। अब मुझे उनकी तकलीफे क्यों सामने आई क्योंकि मैं भी जब किसी अंश उस स्टेज में से गुजर रहा हूं। उस तरह की हालत से घिरा हुआ हूं। मेरे बच्चे अच्छे हृदयों के मालिक है। अच्छे भाव रखते हैं। संगत के साथ जुड़ने की व गुरु महाराज के साथ जुड़ने की जो इनके अंदर इच्छा नहीं है, इसके द्वारा मुझे बहुत दुःख होता है। इस से मुझे माता पिता जी के दुख नजर आते हैं। मेरी केवल यही इच्छा है कि उनका मुंह गुरु महाराज की तरफ, उनकी संगत की तरफ हो जाए। इसके इलावा कोई इच्छा नहीं है। इस बात की मुझे बेहद तकलीफ है। उसका ब्यान नहीं हो सकता। बच्चे जिस्मानी सुखों में सहायक होते हैं। परन्तु उनको मेरे हृदय का दुःख नजर नहीं आता। किसी प्रकार मेरे बच्चों का मुंह गुरु महाराज की तरफ हो जावे जिससे उनका कुछ भला हो सके। अगर उनका मुंह सचमुच इस तरफ हो सके तो मेरी यह तकलीफ दूर हो सकती है।

यह ब्यान बहुत ही दिल को हिलाने वाला था। बहुत ही सुन्दर वातावरण बन रहा था। कितने ही जन पाक आंसू बहा रहे थे। व गुरु महाराज के आगे झुक रहे थे।

श्री इंदर मोहन जी भण्डारी (एडवोकेट) :- मुझे महोत्सव के बाद में इन सभाओं से बहुत लाभ हुआ है। संसार की सब वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं। परन्तु माता पिता का प्यार उनकी कुर्बानियां कहां से मिल सकते हैं। माता जी हमे अच्छा दूध पिलाने का फिकर रखती थीं। मुझे बचपन में कुत्ते ने काट लिया था मेरे माता जी ने मेरी किस प्रकार देखभाल की उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मैंने (आपका हृदय भरा हुआ था, आंखों से आंसू बह रहे थे व रो रो कर) उनके लिए कुछ नहीं किया। आखरी समय कुछ सेवा का मौका मिला। मुझे अपने पिता जी सम्बंध में बुरे

व्यवहार नजर आते हैं। उनका बेहद दुख हो रहा है। मैंने बचपन में चोरी की है। माता जी को पता चल गया था कि मुझे उन्होंने मारा नहीं परन्तु प्यार से समझा कर मुझे चोरी से बचाया। जवानी में गलत जाने से बचाया है। बुरी संगत से बचाया है।

भगवान देवात्मा ने हमारे परिवार पर बहुत ही कृपा की है। मुझे बचपन में मोगे सत्संग पर भेजते थे। मेरा भला करते रहे। मुझे अब फिर महोत्सव से लाभ हुआ है। परन्तु मैं नीच हूं फिर इधर उधर भाग जाता हूं। कृपा करके मेरे घर में सभाएं करवाई जाएं। मुझे अपने स्वार्थ का भयानक रूप नजर आया है। मैंने माता पिता जी के सम्बंध में जो गल्तियां की हैं, उनके लिए माता पिता जी से माफी मांगता हूं। परलोक में उनके भले की कामना करता हूं।

वकील साहिब का बयान बहुत ही ज़ोरदार था। हाज़रीन के दिल पर गहरा असर कर रहा था। उनका भी बहुत भला हो रहा था।

श्रीमान मधुसूदन जी :- माता जी याद आते रहे हैं (बहुत जोर जोर से रो रो कर) पिछले वर्ष माता पिता जी का अर्जन करके मैं धन्य धन्य हो रहा था। आज सुबह मुझे किसी ने अपने आप जगा दिया। भगवान देवात्मा के चरणों में नतमस्तक हुआ। फिर माता पिता जी को प्रणाम किया। उनकी मेहरबानियां याद आती रहीं व मेरा हृदय उनके लिए झुकता रहा। सभी पारिवारिक जनों के लिए शुभकामनाएं की हैं। यहां पर आकर फूलों का हार देखकर (रो रो कर) कि आज माता पिता जी के अर्चन का दिन है, याद करके बहुत देर तक रोता रहा हूं। मेरी माता जी गांव में (बिहार) हैं मेरे चाचा जी के बेटे उनकी सेवा करते हैं। वह दुःखी हैं। मैं अभाग्यवान कोई सेवा नहीं कर रहा। माता जी बेहद याद आती रही हैं। मैं अपने आप को बहुत अयोग्य व असहाय महसूस करता हूं। बहुत ही दुःखी हूं।

यह बहुत ही प्रभावशाली भाव प्रकाश थे इसे बहुत ही स्वर्गीय मण्डल बन रहा था। गुरु महाराज के देवअसरों से मण्डल बहुत ही शानदार व स्वर्गीय बना हुआ था। हाजरीन अपने आप को सौभाग्यवान महसूस कर रहे थे।

इसके बाद डा. विनोद जी खेड़ा ने व शशी जी ने अपनी श्रद्धेय माता जी का अर्चन करके प्रणाम किया। फिर जगदीश जी के बच्चों ने अपने माता पिता जी का अर्चन करके प्रणाम किया। फिर एकता जी व अन्य बड़े बच्चों ने अपने माता पिता का अर्चन करके प्रणाम किया। यहां का दृश्य सचमुच स्वर्ग की तरह बन रहा था। हृदय उच्च आनन्द से धन्य धन्य हो रहे थे।

आखिर में गुरु महाराज की चार बार जय ध्वनि करके यह बहुत ही मुबारक व प्रभावशाली सभा समाप्त की गई।

एक सेवक

हृदय परिवर्तन के दृश्य

6 फरवरी को इतवार की सभा विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी की अनुपस्थिति में श्रीमान विनोद चन्द्रा जी खेड़ा ने करवाई। श्रीमान जगदीश चन्द्र जी कुक्कड़ ने "तुम्हारे दर से हे सतगुरु धर्म का दान मिल जावे" भजन का गान किया। श्री खेड़ा साहब "आत्म-परीक्षण" में से पाठ करना चाहते थे परन्तु हाज़रीन में से एक नए जन ने जो श्री खेड़ा जी के यहा मेहमान थे, 'धर्म' का अर्थ समझाने के लिए कहा। उस पर श्री खेड़ा ने धर्म का अर्थ समझाने का यत्न किया कि आत्मा में उच्च परिवर्तन का नाम ही धर्म है। फिर उनहोंने हाज़रीन में से ही कुछ एक को अपने भीतर परम पूजनीय देवात्मा की शरण में आने से आए उच्च परिवर्तन को बताने के लिए आग्रह किया। उनकी इस प्रार्थना के उत्तर में निम्नलिखित आत्माओं ने अपने भीतर धर्म के प्रभावों द्वारा आए चमत्कार की साक्षी दी। इस संदर्भ में गुरु श्रद्धा का, एक नौजवान जो खेड़ा इन्सटीट्यूट मे पढ़ रहे हैं, हृदय परिवर्तन विशेषकर उल्लेखनीय है क्योंकि उन्होंने उसी दिन अपने हृदय पर उच्च प्रभावों को अधिकार देकर अपनी एक अनुचित मांग को छोड़ कर अपने और अपने परिवार के जीवन में स्वर्गीय प्रसन्नता बिखेर दी।

अन्य जनों के भावप्रकाश भी बहुत हृदयस्पर्शीय थे और सारा मंडल ही देवप्रभावमय हो उठा था। सब ही धन्य धन्य हो रहे थे। 'धर्म' का साक्षात्कार हो गया।

अब उस दिन के भाव प्रकाश दिए जा रहे हैं :-

श्री चमन लाल जी :- मैं जब खेड़ा साहब के यहां काम करने लगा तो माता जी मुझे सभा में बैठने के लिए कहती थीं। लेकिन मेरा मन नहीं करता था। फिर भी बार बार कह कर बिठाती थीं, मुझे बिल्कुल नहीं अच्छा लगता था। फिर कुछ समझ आने लगी तो लगता था कि इसमें तो कोई नई बात है नहीं। और यह बातें तो बड़े लोगों के लिए हैं, हम काम करने वालों के लिए नहीं। फिर भी माता जी ने नहीं छोड़ा, कहती रहीं, बैठ जा बैठ जा। सुनते सुनते कभी अच्छा भी लगने लगा तो झूठ बोलने लगा कि मांस नहीं खाता, अंडा नहीं खाता, शराब नहीं पीता। छोड़ा जाता नहीं था। ऐसे ही झूठ बोलता रहा। सभा में बैठता तो लगता कि गल्त कर रहा हूं। बाद में लगता कि ठीक कर रहा हूं अगर बताऊँगा तो मेरे पीछे पड़ जायेंगे। 3 साल तक ऐसे ही चलता रहा, सभा भी सुनता रहा लेकिन मन से नहीं। जब सब्जी लेने जाता था तो एक दो अंडे जरूर खाता था। इसी तरह जब एकता मेरे साथ जाती तो एक दो बार उसे भी खिला दिया और सोचता कि इस बेचारी को ये खिलाते नहीं और मैं खिलाता हूं तो मैं ठीक करता हूं।

बाद में जब मैं धर्मशाला में माता जी और भाई साहब के साथ गया और वहां श्रीमान जी की सभाएं लगातार सुनने को मिलीं और बाहर जाकर खाने का मौका नहीं मिला, तब पता लगा कि मैं जो कुछ भी कर रहा हूं, गल्त कर रहा हूं और एकता को खिलाया उसके बाद भी दुःख हुआ पर मैंने बताया नहीं। मन में दुखी होता रहा।

यहां आने से पहले मीट खाता था, रात को

जानवरों को पेड़ों पर से गिराकर मारकर खा जाता था, वह भी ध्यान में आया और बुरा लगने लगा। लंगूर की तड़पन दुख देने लगी तब जाकर मैंने श्रीमान जी को बताया। उसके बाद से मैंने सब कुछ छोड़ दिया और सभा भी अच्छी लगने लगी और सुनने लगा।

पीछे एक सभा में श्रीमान जी ने बच्चे की घटना सुनाई कि उसके पिता जी ने उसे उसके मनचाहे पैसे नहीं दिए तो वह घर से निकल गया और फिर सारी उमर उसी गांव में किसी के यहां मज़दूरी करता रहा। इस घटना से मुझे अपनी कमी महसूस हुई। मैंने भी बिल्कुल यही काम किया। मैं भी अपने पिता जी से मेले जाने के लिए पैसे मांगता और मुंह मांगे पैसे न मिलने पर रूठ जाता और कहता मैं अब कोई काम नहीं करूंगा। उनसे घृणा करने लगा और घर से 205 रूपये चुराकर निकल गया। 2 साल तक घर वालों को कोई खबर न दी। गांव वाले कहने लगे कि वह तो मर गया होगा। उससे माता पिता दुखी होते और जगह जगह हाथ दिखाते फिरते। जब दो साल बाद मैं घर गया तो मां बहुत कमजोर हो गई थी पिता जी भी कमज़ोर हो गए थे। फिर भी यह समझ नहीं आई मैंने उन्हें इतना दुख दिया है। यह यहां आकर सभाओं में ही समझ आई कि मैंने उनको इतना दुख दिया है। अब मुझे लगता है कि थे ही नहीं पैसे कहां से देते। पीछे 15 जनवरी को जो सैंटर का कार्यक्रम था उसमें गुरुश्रद्धा ने जो चिट्टी पढ़के सुनायी तब मेरा अपनी तरफ ध्यान गया कि मेरा भी यही होता था। मुझे बार बार यही ख्याल आ रहा था कि यह गुरुश्रद्धा अगर अब समझ लेता है तो जिन्दगी में कुछ बन जाएगा नहीं तो मेरी तरह किसी के यहां काम करना पड़ेगा। जैसा मैं था, प्रीनू में कई चीजें उससे भी खराब लगती थीं। लेकिन जब से सभा में बैठता है जो माता जी और भाई साहब घर में करते हैं, तब से उसमें बहुत ही बेहतरी है। अगर इसी तरह अच्छे प्रभावों में बैठते रहे तो इनका जिन्दगी में कुछ बन सकता है। और आज से तीन साल पहले मेरे बच्चे अपनी बुआ के घर गए थे और वहां इन्होंने आमलेट खा लिया तो पता लगने पर मुझे बहुत ही दुःख हुआ और मैंने अपनी बहिन जी से झगड़ा भी किया कि अगर आपके बच्चों को कोई शराब पिला दे तो आपको कैसा लगेगा। उस दिन से मुझे असली दुख हुआ कि भाई साहब को कितना दुख हुआ होगा जब उन्हें पता लगा होगा एकता के बारे में। भाई साहब ने मुझे कुछ भी नहीं कहा जबकि मैं अपनी बहिन से बहुत नाराज़ होता रहा।

गुरु श्रद्धा : जब मैं खेड़ा सर के यहां पढ़ने आया तो क्लास में कमजोर था, कम नम्बर आते थे। खेड़ा सर ने माता पिता के चरणों में प्रणाम करने को कहा। मैं करने लगा और पढ़ने लगा तो नम्बर अच्छे आने लगे। कुछ दिन बाद रसमी प्रणाम करने लगा लापरवाह हो गया और नम्बर फिर कम आने लगे। फिर खेड़ा सर ने पूछा क्या बात है? (फिर उससे बताया नहीं जा रहा था) थोड़ी देर बाद फिर खेड़ा साहब के हौंसला देने के बाद उसने बोलना शुरू किया कि मैंने अपने माता पिता से मोटर साइकिल की मांग कर रखी है कि मुझे 20 मार्च से पहले मोटर साइकिल दिलवा दो। मैंने जरा भी नहीं सोचा कि इतने सारे पैसे कहां से आयेंगे? अब मैं अपने पिता जी से माफी मांगता हूं और अब मैं मोटर साइकिल नहीं लूंगा। यह कह कर वह अपने पिताजी के चरणों में गिर पड़ा।

श्री जगदीश जी कुक्कड़ :- मैं आठवीं क्लास से ही बुरी संगत के कारण सिगरेट पीने लगा, फिर चोरी करने लगा। शराब, जुआ सब ही बुराईयां मुझ में थीं। सम्बंधों में भी बहुत बुरा हाल था। मैं चण्डीगढ़ देखने के लालच में (अपनी माता जी के साथ) महोत्सव पर आ गया और उनसे वायदा कर लिया कि इन दिनों में सब कुछ छोड़ दूंगा। लेकिन चण्डीगढ़ में घूमता रहा, सब कुछ करता रहा। लेकिन आखरी सभा में पीछे बैंच पर बैठ गया। भावप्रकाश की सभा चल रही थी जिसमें कोई सज्जन अपनी माता के प्रति अपनी अवज्ञा का प्रकाश कर रहे थे तो मेरे अंदर भी धक्का लगा कि मैंने तो मां को धोखा दिया है और फिर प्रेरणा हुई कि मैं भी स्टेज पर जाऊँगा। मैं स्टेज पर गया सिर्फ इतना कह पाया "मां मुझे माफ कर दो।" मां भी रो रही थी। मैं भी रो रहा था। यह मेरा सौभाग्य है कि उस समय से (दिसम्बर 1977) सब बुरी संगतों से मेरा छुटकारा हो गया और मैं इस दर का हो गया।

कशिश के पिता जी :- यह फूट फूट कर रो रहे थे। उन्होंने फिर भी बहुत हिम्मत करके बयान करना शुरू किया। वह कहने लगे कोचिंग सैंटर के "माता पिता संतान दिवस" के कार्यक्रम में शामिल होकर बहुत अच्छे प्रभाव पड़े और मेरे सामने आया कि मैंने बचपन में अपने माता पिता को दुख दिए हैं। मेरे पिता जी पुलिस में थे। घर में मांस पकता था तो मैं भी खाता था। लेकिन मेरी बेटी ने एक बार मुर्गी को कटते हुए देख लिया, तो इसने तभी से मांसाहार त्याग दिया। और अपनी बेटी की पढ़ाई के सिलसिले में मेरा खेड़ा साहब से मिलना हो गया। मुझे पहली बार इनसे मिलने पर लगा कि यह बहुत ही अच्छे इंसान है। इन्होंने जो छोटी छोटी पुस्तिकाएं बिना कीमत के कार्यक्रम के बाद बंटवाई, उनमें से मैंने भी ले ली। उनमें से एक पुस्तक में जब मैंने यह शब्द पढ़े "आपने कसाई का काम ग्रहण करके भंगी की झाड़ू के बजाय बंदूक पकड़ रखी है।" तो मुझे अपनी अवस्था घटिया नज़र आई और अब मैंने भी मांसाहार छोड़ दिया है। और मैं एक Part time काम करता था जिसमें मुझे लगा कि यह मुझे नहीं करना चाहिए, वह भी मैंने छोड़ दिया है। मैं चाहता हूं कि जो जीवन का रास्ता मुझे मिला है, उस पर मैं चलता रहूं।

शोक समाचार

बहुत शोक कि श्रीमति सरस्वती देवी जी तायल, धर्म पत्नी श्रीमान शादी लाल जी तायल, मोगा, रविवार 27 फरवरी, 2005 को अपने घर, देवसमाज गली मोगा में स्वर्ग सिधार गए हैं।

वह काफी समय से ढीली और Bed Ridden थीं।

वह लगभग 90 साल की थी। उन के कोई बेटा नहीं था। वो अपने पीछे 8 विवाहित, घर परिवार वाली बेटियों को छोड़ गई हैं। उनका दाह संस्कार मोगा में देवधर्म विधि से 28 फरवरी को किया गया। उनके श्राद्ध की सभा मोगा में 13 मार्च, इतवार को 12.30 बजे होगी।

कल्याण में माता पिता दिवस पर विशेष सत्संग

कल्याण मलका ज़िला बठिंडा (देव धर्म का पुराना ऐतिहासिक स्थान) में पिछले 24-25 वर्षों की तरह इस वर्ष भी 11 फरवरी से 13 फरवरी तक एक विशेष सत्संग व माता पिता दिवस रखा गया। इस सत्संग के लिए 50-60 पत्र लिख कर जगह जगह पोस्ट किए गए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी वहां स्थानीय सेवकों को लेकर, पहले महोत्सव को लेकर फिर महोत्सव के बाद हर रोज रात को कई बार एक सभा करवाते रहे, जिससे स्थानीय सेवकों के हृदय अच्छी हालत में आते रहे। सभा स्थान की सफाई आदि की गई। उचित स्थान पर गुरु महाराज की पवित्र छवि को शोभायमान किया गया। वहां पर पानी आदि का विशेष प्रबंध किया गया। लंगर के लिए एक पड़ौसी धर्मशाला में प्रबंध किया गया। यात्रियों को ठहराने का प्रबंध 6 धर्म सम्बन्धियों के घरों में किया गया। उन्होंने खुशी से यात्रिगणों को ठहराने में सेवा की।

9 फरवरी शाम को ही 3 जन बाहर से आ गए थे। 9 की शाम से इस सत्संग की सभाएं शुरू कर दी गईं। अगले दिन 30 के करीब यात्री मल्लेका व केसुपुरा से पहुंच गए। 13 तारीख की सुबह भी कुछ स्थानों से साथी सेवक पहुंच गए थे।

9 तारीख की शाम से सभाएं आरम्भ की गई थीं। 10 तारीख को एक सभा, 11 तारीख को 2 सभाएं, 12 तारीख को 3 सभाएं व 13 तारीख एतवार को खास माता पिता की सभा कराई गई। कुल 8 सभाएं की गईं।

यहां पर बहुत ही कड़ाके की सर्दी व गहरे बादलों व वर्षा भरे मौसम में चण्डीगढ़ से 12 जन, गोनियाना मंडी, महिमा सवाई, केसुपुरा मल्लेका से 30 जन, बठिंडा से 1 जन, भुच्चो मण्डी से 2, नथाना से 1, संगरूर से 1 व अन्य कई गावों से कुल 70-75 के करीब यात्री वैन, कार आदि द्वारा इस अवसर पर पहुंचे जो बहुत ही सुन्दर नज़ारा था। स्थानीय सेवक सेवकाओं के भिन्न दूसरे गांव वासी भी अच्छी गिनती में पहुंच कर लाभ उठाते रहे। सभा स्थान पूरी तरह भर जाता रहा। 100 या इस से भी ज्यादा हाज़री हो जाती रही।

इस शुभ अवसर पर सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी व श्रीामन बलबहादुर सिंह जी करवाते रहे। भजनों का गान श्रीमान बलबहादुर सिंह जी व श्रीमान जगदीश प्रसाद जी कुक्कड़ बहुत उच्च भावों से भरकर करते रहे।

स्थानीय सेवकों ने भी बहुत चाव भाव से यात्री जनों की सेवा करके खुशी प्राप्त की। श्रीमान बहबहादुर सिंह जी सभाएं करवाकर नाना प्रकार की सेवा करके बहुत खुश रहे और सभाओं से भी खास प्रभावित होते रहे।

लंगर का प्रबंध 4 सहायक जन रखकर श्रीमान बहबहादुर सिंह जी ने करवाया। उनकी धर्म पत्नि श्रीमति रुपिन्द्र कौर जी, बावजूद बहुत उलझन व विरोधी सेहत में भी लंगर में बहुत सेवा करती रहीं। चाय दूध की होस्ट अपने अपने यहां ठहरे यात्रियों की बहुत उत्तमता से सेवा करते रहे। सब

यात्री इस पहलु में बहुत संतुष्ट थे।

3 दिन तक बहुत सुन्दर वातावरण बना रहा। सफाई कुछ साथी खुशी खुशी करते रहे। एक नौजवान बठिंडा जाकर 75 हार व गुरू महाराज के अर्चन के लिए बड़ा हार विशेष सभा के लिए लाए।

9 तारीख रात को सभाएं आरम्भ कर दी गईं। उनका संक्षिप्त हाल इस प्रकार है। 9 फरवरी रात को इस सत्संग की पहली सभा की गई। इसमें बावजूद वर्षा व खराब मौसम के कुछ जन आ गए थे। सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में ये बताया गया कि नेचर में असरों का बहुत बड़ा खेल जारी है। इंसान अक्सर बुरे असरों में ही वास करता है व बर्बाद होता है परन्तु उसको कुछ पता नहीं चलता। इंसान को अपना आप ठीक, बड़ा अच्छा व निर्दोष दिखाई देता है। उस को अपनी कोई कमी, कमज़ोरी या बुराई दिखाई नहीं देती। बुरे असरों से बरबाद जिन्दगियों के बारे में बयान किया। बुरे असरों से घिर कर मनुष्य के लिए नीच बनना जरूरी है। हानि उठानी जरूरी है। भले असर भी अपना काम करते हैं, भले असर बहुत कम हैं। न के बराबर हैं। देवात्मा सत्गुरु अद्वितीय असरों का दान देते हैं जिससे मानव जीवन की मिथ्या व पापों से रक्षा होती है। दुखों, कष्टों से रक्षा होती है, इंसान उनसे निकलता व कुछ का कुछ बन जाता है। कोयले हीरे बन जाते हैं।

10 फरवरी शाम को सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई, इसमें 20 के करीब जन आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि मनुष्य को हवा, पानी व खुराक का तो पता लग गया है कि इनके बिना गुजारा नहीं, मौत है। लेकिन इस सच्चाई का कि देवात्मा की शरण बिना, मनुष्य के लिए बर्बादी व विनाश है, देवात्मा की शरण के बिना मनुष्य के लिए मोह, मिथ्या, पाप व अज्ञान में फंस कर बुरी तरह बर्बाद होना जरूरी है। कहां मेरी भलाई व कहां मेरी तबाही है, देवात्मा की रोशनी के बिना बिल्कुल पता नहीं लगता। वह नशे पीता है व बर्बाद होता है। वह मांसाहार से निर्दयी व कसाई बनता है। चोरी, जुआ और बेइमानी के कारण दुख भोगता है व नाश को प्राप्त होता है। मिथ्या व अंधेरे में मुंह माथा तुड़वाता है। घरों में नरक व क्लेश पैदा होता है। मार पीट व कत्ल आदि कि समस्या आ जाती है। समय से पहले मौतें होती हैं। आत्मा की कोई होश नहीं होती और उसका कोई बोध प्राप्त नहीं होता। पशुओं से बुरी जिन्दगी व्यतीत करके कुत्ते बिल्लियों जैसी मौत मनुष्य मरता है। देवात्मा की शरण मनुष्य जीवन की अथाह रक्षा करती है और उसका भला करती है व उचित बरकतों का भागी बनाती है।

जिस प्रकार हवा इंसान के लिए आवश्यक है उसी प्रकार देवात्मा की शरण व उनका सम्बंध जरूरी है।

इसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि मनुष्य को अपना आप और कहीं दिखाई नहीं देता। देवात्मा की शरण के बिना मौत व विनाश है। देवात्मा की शरण में ही जीवन की रक्षा व विकास है। मनुष्य देवात्मा की शरण में अपनी नीचता देखता है और उससे निकलता है। सर्वहितों की वर्षा होती है। यह सभा बहुत अच्छी व प्रभावशाली रही। हाज़रीन ने कुछ न कुछ प्रभावित होने का अवसर प्राप्त किया।

11 फरवरी प्रात: की सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें 20 के करीब स्त्री पुरुष

आ गए थे। खतौली से धीमान जी उनके साथ एक बुजुर्ग भी इस सभा से पहले पहुंच गए थे। इस सभा से पहले "धर्म पाए बिना जीना जन्म अपना यह है खोना" भजन गाया गया। फिर बताया गया कि पशु पक्षी की सोच व बुद्धि बहुत ही सीमित होती है। वह पेट या भूख, गर्मी, सर्दी को जानते हैं। वह यह नहीं जानते कि कल को भी भूख लगेगी। इसलिए कोई यत्न अभी कर लिया जाए। वह अपने शरीर तक को अच्छी तरह नहीं जानते। उनको रोगों का कोई पता नहीं। मनुष्य का दिमाग बहुत ही उन्नतशील है। वह बहुत कुछ सोच सकता है। वह अपने शरीर व उसके सुख स्वाद व मान बढ़ाई के लिए जीता है। उससे आगे अक्सर उस की सोच नहीं जाती। जीवन क्या है? इस का कोई विशेष लक्ष्य क्या है? जीवन में सबसे जरूरी काम क्या है? जिन्दगी की सफलता क्या है व विफलता क्या है? जो मनुष्य यह नहीं सोचता, उस का जीवन स्तर पशु के समान है। वह बुद्धिमान पशु ही है।

अगर मनुष्य को पता भी लग जाए कि जिन्दगी में धर्म प्राप्ति सब से बढ़कर प्राप्ति है फिर भी धर्म क्या है आदि का ज्ञान नहीं है। वह पाठ, जप, तप व मन्दिर गुरूद्वारे में नाम जपने को ही धर्म समझता है जो कि गलत है। धर्म अच्छे बनने का नाम है। भले बनने का नाम हैं, अच्छे स्वभाव का नाम है, अच्छे व्यवहार का नाम है। जिसके सम्बंधों में नरक है वहां धर्म नहीं, जो नीच कर्मी हैं वहा धर्म नहीं। जो केवल अपने या अपने परिवार में लिए ही जीता है, वहां धर्म नहीं। जो पर सेवा का काम नहीं करता, वहां धर्म नहीं है। इसलिए धर्म उच्च भावों से आता है। उच्च भावों से व्यवहार ठीक होते हैं। उच्च भावों से मनुष्य परसेवा का काम भी करता है।

अत: उच्च भावों की कमाई जीवन में सबसे ऊँची कमाई है। गुरु महाराज उच्च भाव पैदा करके सच्चे धर्म का दान मनुष्य को देते हैं, इस प्रकार उस का परमहित व जीवन सफल करते हैं।

शाम की सभा 5.30 बजे रखी गई। इस सभा में केसुपुरा, मल्लेका से एक ट्रक स्त्री पुरूषों का भरकर आ गया। चण्डीगढ़ से खेड़ा साहिब जगदीश जी, मधुसूदन जी आदि 9-10 जन आ गए। संगरूर से सीता राम जी भी आ गए। सभा स्थान काफी भर गया था। यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। पहले भगवान का दान पाने के लिए प्रार्थना की गई। फिर भजन के बाद सभापति जी ने बताया कि मनुष्य दुखों, मुसीबतों, रोगों, मौत, हानि व बरबादियों से घिरा हुआ है। मनुष्य इनसे बचने के लिए नदियों, अग्नि व सांप आदि को देवते समझ कर पूजा करता है। मनुष्य यह जानकर कि वह फिर मुझे दु:ख न भेजें, इसलिए उनको प्रसन्न करने के लिए उनकी पूजा करता है।

परम पूज्नीय भगवान देवात्मा ने एक नई रोशनी दी है। उन्होंने फरमाया है कि मनुष्य के सब दु:ख, मुसीबतें, रोग, घाटे, असफलता व बर्बादी उसके अपने ही नीच भावों के कारण हैं। नीच भावों के फल दु:ख, हानि व विनाश हैं। अपने नीच भावों को जानें व उनसे मुक्त होवें। देवात्मा अपनी देवज्योति में हमारे नीच भावों का भयानक रूप दिखाते हैं। वह अपनी शक्ति द्वारा नीच भावों को खत्म करते हैं। देवात्मा ने अपने देवअसरों द्वारा बर्बाद व उजड़े हुए मनुष्यों को बसाया है। देवात्मा

ने डूबते हुए मनुष्यों को बचाया है। विशेष घटनाओं द्वारा देवात्मा के कारज को पेश करने का यत्न किया है। बहुत ही प्रभावशाली वातावरण बन गया।

इसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने श्रीमान जगदीश जी व श्रीमान गुरचरण सिंह जी व अन्य कई जनों के देवात्मा की शरण में आने से पहले के स्वभाव व बाद में किस प्रकार शानदार शुभ परिवर्तन आया, उसका ब्यान किया। सम्बंधों में भगवान देवात्मा जो उच्च कारज करते हैं, उनका बहुत ही सुन्दर ढंग से बयान किया गया।

इसके बाद श्रीमान गुरदेव राज जी ने नशई जनों की दुर्दशा का नक्शा पेश किया। किस प्रकार शराब पीकर दो जन कुछ समय बाद ही मौत की भेंट हो गए। शादी में ही नरक पैदा हो गया, उस का चित्र पेश किया गया। अपील की गई कि ऐसे बर्बादी के ज़हर से बचें।

12 फरवरी सुबह 9.30 बजे सभा हुई। इस सभा में भुच्चो मंडी, रामपुरा व चण्डीगढ़ से कुछ जन आकर शामिल हुए। सब के बाद श्रीमान विपिन जी महिंयावाले से पधारे। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। इसमें सम्मान भाव व श्रद्धा भाव की जरूरत व कीमत को दर्शाया गया। सम्मान, श्रद्धा भाव के लक्षण हाजरीन से पूछ कर व और साफ करके बताए गए। बहुत सुहावना वातावरण बन गया। आखिर में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस भाव की सुन्दरता, जरूरत व अज़मत का सुन्दर ढंग से बयान किया। हाजरीन भारी संख्या में आकर इस सादा, सरल व स्पष्ट सभा से लाभ उठाते रहे।

दोपहर 3 बजे एक और सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें शुक्रगुजारी के भाव की जरूरत व महिमा का पुरज़ोर बयान किया गया। सभापति जी ने अपने उपकारी जनों का ब्यान किया। अपने शीश को उनके हज़ूर में झुकाया।

हाज़रीन में से 4-5 जनों ने भरे दिल से अपने उपकारियों का बयान किया। बहुत ही स्वर्गीय मंडल पैदा हो रहा था। फिर श्रीमान जगदीश जी ने "मैं कृतज्ञ भाव उपजाऊ" "व शरण तुम्हारी न आता मैं" भजनों का गान किया। हाजरीन धन्य ध न्य हो रहे थे। कुछ नए जन आकर सभापति जी को झुक झुक कर धन्यवाद दे रहे थे। एक एक सभा का बहुत ही धन्यवाद देते थकते नहीं थे।

शाम को फिर एक सभा की गई। उस के सभापति श्रीमान बलबहादुर जी थे। पहले श्री गुरचरण सिंह जी ने 'देव गुरु की शरण न आता, पाता दुःख घनेरे मैं' गाया। जो बहुत ही हृदयगत भावों से गाया। बहुत सुन्दर वातावरण बना। फिर श्रीमान जगदीश जी ने 'अहो भाग्य सतगुरु तुम्हें मैंने पाया' भजन गया। इससे और भी उच्च असरों का मंडल बन गया।

सभा में बताया गया कि यह विश्वास किया जाता है कि प्रभु के नाम या उसके नाम के सुनने से दुःखों व पापों का नाश हो जाता है। या फिर हृदय की मैल नाम जपने से दूर हो जाती है। यह ठीक नहीं हैं उपरोक्त बातों से हृदय शुद्ध होता है।

भगवान देवात्मा के अद्वितीय प्रभावों द्वारा कितने ही जनों के द्वारा किए गए हानि परिशोध के साधनों का हृदय स्पर्शीय बयान किया गया। एक बेटे का पिता से माफी का पत्र पढ़ा गया। कई हृदय पिघल रहे थे। पाक आंसू बहाने के लिए बेबस हो

रहे थे। इस प्रकार यह सभा बहुत प्रभावदायक सिद्ध हो रही थी।

माता पिता सम्बंधी विशेष सभा 13 तारीख की सुबह रखी गई। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई।

पहले देवस्तोत्र का गान व व्याख्या की गई। फिर गुरु महाराज के दान की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई। इसके बाद सभापति जी ने बयान किया कि देवात्मा सत्गुरु विकास क्रम में निराली शक्तियां लेकर प्रगट हुए हैं। उन्होंने नया ज्ञान दिया है। धर्म की दुनियां में नई सच्चाईयां बताई हैं।

उन्होंने फरमाया है कि धर्म सम्बंधों में हैं। सम्बंधों से परे व वैरागी होने में नहीं है व सम्बंधों को तोड़ने में नहीं है। परन्तु सम्बंधों को जोड़कर उच्च व स्वर्गीय बनाने में है। उन्होंने 16 सम्बंधों में नई शिक्षा दी है। उन्होंने हमें जीने का ढंग सिखाया है। सम्बंधों में स्वार्थ के साथ जुड़ने की बजाए उच्च भावों के सूत्रों के साथ जुड़ने का गुर बताया है। देवात्मा ने नारकीय सम्बंधों को स्वर्गीय बनाने का बीड़ा उठाया है। श्रीमान जगदीश जी ने "श्रद्धा भाजन मात पिता जी" वाला भजन गाया। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी की वीडियो टेप की हुई एक तकरीर टेलीविजन पर दिखाई गई जो उन्होंने डा. खेड़ा के सैन्टर के "मात पिता संतान दिवस" के फंक्शन पर दी थी। और उसके बाद माता पिता के सुन्दर रूप को दर्शाने वाले तीन अति सुन्दर गीत जो बच्चों ने उसी फंक्शन पर गाए थे उनको टी. वी. पर दिखाया गया जिससे बहुत ही सुन्दर वातावरण बन गया। हाज़रीन प्रभावित होते नज़र आ रहे थे। इसके बाद सभापति जी ने गुरु महाराज के महान उपकारों का बयान करके अपने व हाज़रीन के महासौभाग्य को महसूस करवाया। फिर हाज़रीन को इस विषय पर भाव प्रकाश करने के लिए प्रार्थना की गई।

भाव प्रकाश

श्रीमान विनय जी : आज से कोई दो महीने पहले मेरे पिता जी ने मुझे कहा कि बेटा सभा में आया करें तो मैंने तुरन्त जवाब दे दिया कि मुझे ऐसा न कहा करो। मेरा दिल सभा में जाने को नहीं करता। यहां पर आकर पता लगा है कि मैंने ऐसा जवाब देकर अपने पिताजी को कितना बड़ा दु:ख दिया है। मेरे पिता जी ने भी हमारे लिए क्या कुछ कष्ट सहे हैं। वह सब याद आकर (बेबस रोकर) हृदय चरणों में गिरता है। हमारी खातिर पिता जी ने निरादर व अपमान भी बरदाशत किए। मेरी माता जी ने मेरी खातिर अपनी नौकरी भी छोड़ दी। मेरे बच्चे के मल मूत्र उठाती हैं व उस को सम्भालती हैं। उनका यह रूप मुझे पहले कभी महसूस नहीं हुआ। परन्तु यहां पर आकर दिखाई दिया है। पिता जी की ईमानदारी व हमदर्दी के गुण नजर आए हैं जो उनके चरणों में झुकाते हैं। आगे से सभा में जाने से कभी भी इंकार नहीं करूंगा व पिता जी को तकलीफ नहीं पहुचाऊंगा। सभा में आना सौभाग्य महसूस हो रहा है।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी : इस वर्ष फिर मेरा हज हो गया। माता पिता के गुणों को गुरु महाराज की कृपा द्वारा देखने के योग्य हो गया। उनको सम्मान देने को योग्य हो गया। यह हालत पाकर मैं धन्यवादी होता हूं। मैं केवल अपनी गलतियों व नीचता का ही जिक्र करूंगा। बचपन से ही मेरा

जीवन गलतियों का इतिहास है। बचपन से मैं नहाने से डरता था। पिता जी नहा रहे थे। माता जी के कहने पर पिता जी ने मुझे पकड़ कर नहला दिया जिससे मैं गुस्से में आ गया व पिता जी के ऊपर मिट्टी की मुट्टी भर कर डाल दी। जब मैं और बड़ा हुआ, स्कूल में पढ़ाई करके वापिस आता तो धीरे धीरे चोरों की तरह पैर रखता ताकि आहट न हो। बीमार पड़ी मां को मेरे आने का पता न लगे व किसी प्रकार की कोई दवाई आदि लाने को न कहे। जब मैं सातवीं आठवीं में पढ़ता था तो माता जी बहुत बीमार हो गईं। उनको लुधियाना में सी. एम. सी. में दाखिल करवाना पड़ा। पीछे मैं अपने छोटे बहन भाईयों की सेवा करने की जगह उन पर सख्ती करता व मार पीट भी करता। जब और बड़ा हुआ सगाई के अवसर पर मैंने शराब चुरा कर अपने भाई राम सिंह व भोला सिंह के साथ बैठ कर इतनी पी कि तीनों ही बेहोश हो गए। मां बाप के लिए मुसीबत खड़ी कर दी। हमारे बचने का खतरा हो गया। सवा चार बजे तक होश नहीं आई। उस समय तक माता पिता बचाने का सारा ज़ोर लगाते रहे। जब और बड़ा होने पर कालेज जाने लगा तो वहां शराब पीता व फिल्में देखता था।

माता पिता जी ने जो कमाई खून पसीना बहा कर की थी उसको बड़ी बेदर्दी से बर्बाद करता था। दो बार फेल होकर धन का नाश करता था। इस कदर गाफिल हो गया कि दाखिला भेजने के योग्य न रहा। इसके अलावा भी मैंने बहुत घृणित व शर्मनाक हरकतें कीं जिनका पता लगने से उनको बहुत दु:ख होना था। टीचर बनने पर जब रुपये आने लगे तो शराब पीना बढ़ गया। जब माता पिता टोकते तो बहुत बुरा लगता था। गंवार, अनपढ़ नज़र आते थे। कई बार परमात्मा को भी कोसता कि किस गलत जगह जन्म दे दिया। माता पिता तड़प तड़प कर वक्त निकालते, अपीलें करते, रोते परन्तु मुझे उनका दुख बिल्कुल भी महसूस न होता। मुझे अब याद आती है वफा तेरी, जफा मेरी। एक लोहड़ी के दिन शराबी होकर घर आया। माता जी ने कहा कि हम गुड़ बांटने के लिए आपका इंतजार कर रहे हैं तो माता जी को गंदे बकवास भरे शब्द कहे। इसके लिए बेहद शर्मशार हूं व होता रहूंगा। जिस बच्चे से डरती माता रोने लग जाती है वह बेहद नालायक होता है। हे माता पिता जी मैं आपका अपराधी, गुस्ताख व जुल्म करने वाला बेटा हूं। गुरु महाराज ने मुझे थोड़ा बहुत इस रूप से निकाला है। हे हित के भण्डार! आपने मुझे बकवास करने से बचाया है।

श्रीमान गुरदेव राज जी : आज से 25 दिन पहले मेरे को स्कूटर से गिर कर चोट लग गई थी। मां को जब पता लगा तो कहने लगी कि मेरे पैरों से धरती जैसे निकल जाती है, ऐसे महसूस हो रहा था। ओह! माता के अंदर किस प्रकार प्यार व ममता बेटे के लिए होती है। कुछ वर्ष पहले मां के साथ ही ऐसी चोट का हादसा हो गया था। मुझे माता के दु:ख का कुछ भी महसूस नहीं हुआ। मां ने इस उम्र में भी मेरी बहुत सेवा की। मुझे सेक देती रहीं।

पिता जी बताते हैं कि किस तरह उन्होंने व माता जी ने सारा सारा दिन खेतों में खून पसीना बहा कर कमाई की व हमारी पालना की। उन्होंने दो एकड़ जमीन से 12 एकड़ जमीन बना दी। आप पैदल चलते रहे हमें कारों पर बिठा दिया। आप झुग्गी में रहकर हमें कोठी बना के दे दी। माता पिता हमारी रुचि के विरुद्ध छोटी सी बात भी करते

हैं तो हम अकड़ कर बोलते हैं, डांटते हैं, उनको लताड़ते हैं। एक माता को हमारे गांव में उनके बहू बेटों ने घर से निकाल दिया। घर को ताला लगा कर खुद कुछ दिनों के लिए बाहर चले गए। मां ने उनके वापिस आने तक उनको दिल से लताड़ना व मामूली छमकी तक मारना भी उचित नहीं समझा। क्या ऐसे बच्चों को मां का रूप नज़र आ सकता है। कभी भी नहीं। यह सब कुछ इस दर पर आने से ही नज़र आ सकता है।

श्रीमान मेहर सिंह जी : मैं बिल्कुल अंधा था। मेरे पिता जी बहुत नेक इंसान थे। वह लोगों से शराब आदि छुड़ाने का काम करते थे। परन्तु मैं खुद शराब पीने लगा। इस तरह मांस शराब का सेवन करके मैं उनको सताने का काम करता रहा। उन्होंने मेरी बुआ जी को बुलाकर हाथ जोड़कर मुझे शराब छोड़ने की अपील की। मैंने उनको जवाब दिया कि मैं अपनी कमाई की पीता हूं। पिता कुछ भी बोलते तो मैं उनकी बेइज्ज़ती कर देता व उनको ऊँचा बोलकर लताड़ता व चुप करवा देता। मेरी माता जी मेरे पिता जी को रोकती कि इस को कुछ न कहना, इसको कुत्ते की जुबान लगी हुई है।

पिता जी की बस के नीचे आकर मुश्किल से जान बची। उनकी बांह पर चोट लग गई। पिता जी ने दु:ख से जब मुझे बताया तो मैंने आगे से हमदर्दी करने की जगह यह कहा कि आप इसी के योग्य हैं। मैं यही बकवास करता रहा कि पिता जी आपने हमारे लिए किया ही क्या है। जब मेरे बेटे ने मुझे यही शब्द कहे तो मुझे बेहद दु:ख हुआ। पांच साल तक डिपरेशन का शिकार रहा व बड़ी मुश्किल से राजी हुआ। मैं माता पिता जी को बहुत सताता व दु:ख देता रहा। पिता जी बहुत ईमानदार थे। पाठ से मिली पूजा की आमदन बीमारों व जरूरतमंद लोगों पर खर्च कर देते थे। अगर हम आज खुशहाल हैं व अच्छी रोटी खाते हैं तो पिता जी की नेक कमाई की कृपा है। एक बार पिता जी बेहद थक कर चूर हो गए थे। मुश्किल से आराम करने लग गए थे। इतने में ही किसी रोगी का पता चल गया। उसके लिए सब थकावटें भुला कर कितने मील पानी में से चल कर रोगी के लिए दवाई लाए व उनकी सेवा करते रहे। बहुत ही मुश्किल हालातों में भी पिता जी अपनी ईमानदारी पर अटल रहे। वह चाहते तो जो जमीन हमने बेची थी उसकी कीमत अचानक बढ़ जाने पर हक शुभा कर सकते थे। व सारा कर्जा उतार सकते थे। वह भैंस रख कर अपने हाथ से चारा काटने व पशुओं को डाल कर दूध पैदा करते रहे। यह सब कुछ मुझे उनके चरणों में झुका देता है। पिता जी ने सेवा से खुश होकर मुझे कहा कि अगर हो सके तो अपने सब भाई बहनों को समाज के साथ जोड़ देना। पिता जी की खुशी के लिए बुआ जी की रुपए से सेवा करता हूं। इस बात का बहुत दु:ख होता है कि मैं धन अनुरागी बन कर बनता हुआ मकान छोड़ कर बीमार मां के पास न गया, जो हमारी सेवा करती करती घिस गई थी। उस के आखरी वक्त भी न पहुंच सका। मां, मुझे तरसती हुई दु:ख से मर गई। मैं उसके पास (रो रो कर) न जा सका। मैं कितना बड़ा अभागा। बाद में पछतावा ही रह गया। मैं अब अपनी सास मां की सेवा करके खुश होता हूं। घर में स्वर्ग बन गया है। मैं उनका बेटा होने का यत्न करूंगा।

डॉ. मुन्सा सिंह जी : ऐसे प्रभाव व शिक्षा कही नहीं मिली। मैं दूसरों को शिक्षा देता था। परन्तु माता पिता अब नज़र आने लगे हैं। मुझ बेशर्म को प्रभाव

हिला रहे हैं। मेरे पिता जी तीन चार भाषाएं जानते थे। उन्होंने मुझे कई धार्मिक ग्रंथ पढ़ाए। परन्तु मैंने कभी धन्यवाद नहीं दिया। पिता जी हमारे लिए दो रुपए रोजाना की मजदूरी करते रहे। पिता जी ने घाटे व हानि व डर के बावजूद अफसरों के पास झूठ नहीं बोला। बचपन में नरमा बेच कर मैं रेबड़ीया खा गया। पिता जी ने सख्त सजा दी व हमेशा के लिए ईमानदार बना दिया। गुरु महाराज की कृपा से पिता जी के पास रह कर उनकी सेवा करने का सौभाग्य मिला। भाईयों के साथ बंटवारे के समय मैं पागलपन में कह दिया कि पिता जी आपने मकान क्या करना है। इस गुस्ताखी का दु:ख हो रहा है।

श्रीमान सुन्दर लाल जी : मैं पापी हूं। मेरे पारिवारिक जन बैठे हैं, मुझे यह बताने में बड़ी शर्म आती है कि मैंने अपनी जन्मदाता का बहुत अपमान किया है। माता जी ने बहुत कमजोर हालात में बेहद दु:ख तकलीफों से हमारी पालना की है। मैं अभी बच्चा ही था कि मुझे किसी के घर में दानों के बदले में नौकर रखा हुआ था। रात को पानी लगा रहा था। पानी में खड़ा रहने के कारण मेरी लातों को हानि पहुंच गई थी। मेरी लातों मे कोहड़ चल गया। घर में कोई पैसा नहीं था। एक जोगी ने 20 रुपए लेकर मुझे ठीक किया। मैं काम के योग्य हो गया। फिर भी मैं मां व बड़ी भाभी पर थानेदारी करता रहा। बड़ी बहन के लिए मां एक बर्तन देने लगी तो मैं कुत्ते की तरह पड़ गया। झाड़ कर बिठा दिया। (रो रो कर) मां का हजारों बार अपमान किया है। मां जो पूजा के योग्य थी उसको व बड़ी भाबी जी को लताड़ता रहा। मै अपनी मां को मारने वाला हूं। सारा बयान करने से मेरा मुंहकाला होता है। एक मौत रोजाना मरता था। मेरे कुड़म जी बीमार हो गए। उनकी हार्दिक भावों से सेवा की। आपरेशन हो गया। वह बच गए। हजारों रुपए खर्च करके राहत मिली। गुरु महाराज ने ईमानदार बना दिया। मुझे 71 के करीब साखियां याद हैं। किसी ने अपना आप नहीं दिखाया। अगर मेरा इस गुरु की तरफ मुंह न होता तो मैं देवता सरूप कुड़म को मार लेता। भाईयों ने मिल कर मेरा खर्चा भी बांट लिया।

एक नए नौजवान : मेरे पिता जी ईमानदार, कर्मठ व धार्मिक इंसान हैं। डा. मुंशा सिंह जी हमारे यहां आकर सभा करवाते हैं। मैं पिता जी के कहने पर कभी सभा में नहीं गया। जान बूझकर लेट हो जाता रहा हूं। आठ वर्ष पहले मेरी उंगली जख्मी हो गई थी। मेरी माता जी बहुत रोया करती थी जो मुझे अब याद आती है।

मैंने पिता जी की कमाई को बहुत बर्बाद किया है। 11 कक्षा में ट्यूशन रखी। पिता जी ने उनके दो हजार रुपए देने से मना कर दिया। मैं गल्ले से चोरी रुपए निकालकर टीचर को देता रहा। आगे से पिताजी को दु:खी नहीं करूंगा। अपने मां बाप को नहीं सताया करूंगा। मैं इस सत्संग के साथ जुड़ूंगा।

श्री गोबिंद सिंह जी : पदमपुर में कई सभाएं सुनीं। वहां पर कोई खास असर नहीं हुआ। यहां आकर बहुत प्रभाव पाए हैं। अब नज़र आया है कि डेढ साल पहले माता जी के साथ लड़ पड़ा था। उस मां ने सिलाई की मशीन चला कर मेरी पालना की है। मां का कर्जा कभी नहीं चुका सकता। (रो रोकर) अब होश आई है कि मैं क्यों न मर गया। पत्नी ने जो सेवा की है उसका बयान नहीं हो सकता। मैं पत्नी के साथ आए दिन नाराज होकर रूठ पड़ता था। अब बहुत शर्म आती है। आज के

बाद पत्नि को नहीं तंग करूंगा।

श्रीमान बलकार सिंह जी : मुझे शर्म आ रही है कि मैं माता का कोई गुण बयान नहीं कर सकता। बहुत दु:ख हो रहा है। माता जी मेरे अध्यापक को मीठी गोलियां दे आया करती थी कि बच्चों को दे देना ताकि वह स्कूल में आ जावें। मैंने झूठ मार कर दुकान से चीज ले लेकर कर्ज़ा चढ़ा दिया।

अब माता का रूप नज़र आने लगा है। अब 50 रुपए मांगती हैं तो 600 दे देता हूं। मां सिर्फ 50 रुपए रखकर बाकी वापिस कर देती है।

श्रीमान मधुसूदन जी : यहां आकर माता पिता की तरफ ध्यान जाता है। मेरे पिता जी गुजर गए। चाचा जी ने मेरी पालना की है। उन्होंने मुझे थोड़ा बहुत पढ़ाया लिखाया है। माता जी को घृणा से भरकर अपमान कर जाता था। (रो रो कर) मेरा ध्यान बार बार अब उनके चरणों में जाता है। इस दर पर जोड़ने के लिए डा. खेड़ा साहिब जी की माता जी ने उपकार किया है। मैं यूं ही बर्बाद होकर मर जाता अगर इस दर से न जुड़ता।

श्री गुरचरण सिंह जी : मैं वही कातिल हूं जिसने अपने पिता जी को मारा है। मैं ऐबों से भरा हुआ था। बुरी संगत में फंसा हुआ था। कोई होश नहीं थी। बड़ा पापी था। पिता जी दु:खी होते होते रोगी हो गए। गुर्दे खराब हो गए। चिंता का रोग लग गया। वह धार्मिक थे। मैं होश में नहीं था। मेरा व पिता जी का सांझा खाता था। मैंने उसमें से रुपए निकाले व जुए में हार गया।

पिता जी को दु:खी होकर अलग खाता खुलाना पड़ा। इस बात को लेकर मैं पिता जी पर गरजता था। उनका अथाह निरादर हुआ। पिता जी बीमार पड़ गए व संसार से विदा हो गए।

श्री तुलसी दास जी : गुरु के अमृत की वर्षा हुई है। पापी रूहों की अंधता दूर हुई है। उनका भला हुआ है। मैं पिता को गलत बोलता था। और वह बिल्कुल चुप हो जाते थे। अब मैं इस पक्ष में गलत नहीं बोलूंगा। अगर पिता जी कुछ कहने भी लगे तो मैं बिल्कुल चुपचाप सुनूंगा।

अगर दुनिया में कोई सच्चा धर्म है तो यही धर्म है। ऐसा धर्म और दुनिया में कोई नहीं। अगर स्वर्ग है तो इसी जगह पर। मैं ऐसे निराले गुरु व निराले धर्म की खुशखबरी लोगों तक ज्यादा से ज्यादा पहुंचाऊँगा।

श्री बूटा सिंह जी : सेवा में बहुत कमियां रह गई हैं। उनके लिए माफी मांगता हूं। आगे से ध्यान रखूंगा।

समय बहुत हो चुका था। दोपहर का एक बज चुका था। चाहे अभी और लोग भावप्रकाश करने की इच्छा रखते थे पर इधर ही सभा को समाप्त करना पड़ा। और उन सौभाग्यवान संतानों के लिए प्रेरणा की कि वह अपने हाजर माता पिता का अर्चन करके अपने उच्च भावों को तृप्त करें।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सबसे पहले अपने हाजर माता पिता जी का अर्चन करके उनके चरणों में शीश झुका कर प्रणाम करने का साधन किया। विनय जी सुपुत्र जगदीश जी ने भी अपने पिता जी के चरणों में सिर रख कर अपने पाक आंसू बहाए और प्रणाम किया।

शेष भाग 20 पेज पर

Don't Remain Negligent

O' Man! you are not just a body alone, you are a soul too.

This body will get shattered one day. Do not ruin your life in the pursuit of physical comforts and pleasures because the way your body will be left behind here, the same way, objects of its comfort and pleasures will also be left behind here itself. You will not be able to carry anything with you when you depart from here. Now, you judge yourself what you stand to gain from this type of businesslike approach. Had you gone to some foreign land for making money and had you accumulated lot of money by burning midnight oil there; if every bit of it is snatched away from you as per the law of the land when you intend to return home, then think how terrible a bolt from the blue will it be for you! At that time, will you not feel a heart burst within? At that moment, shedding tears copiously, will you not say, "Look, if I had known that my entire life's earnings will be snatched away from me like this, then why would I have undergone such a grave hardship and why would I have ruined my life in amassing it toiling day and night?" See with the open eyes of your heart that this is the plight of material pursuits in this world. You will have to leave whatever wealth you amass here behind at the time you quit this world as per the law of nature. See what treatment has been meted till now to those who have left this world before you. Then why do you go blind and deaf after seeing and hearing all this? There is still time. Come to the senses and do not become a worm of this world. Do bother also about earning that real spiritual wealth which will stand you in good stead and give you comfort here and you will be able to carry it along with you at the time of your departure from here. Then blessed are those who do not neglect earning the real spiritual wealth and are not found to be wailing at the time of their passing away on having ruined their life pointlessly. Instead, they depart from here with peace and contentment.

(English rendering of Bhagwan Devatma's article: "गाफल मत रह")

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पेज 18 का शेष भाग

कोई 35 हार इसी साधन के लिए इस्तेमाल किए गए। और मां बाप के हृदयों को पाक खुशी से भर रहे थे। बड़ा ही सादगी भरा वातावरण बन गया। बहुत सारी आत्माएं धन्य धन्य हो रही थीं।

लंगर के लिए भी 4 हजार से ऊपर दान प्राप्त हुआ और भले कार्यों के लिए भी अलग से दान प्राप्त हुआ। कुछ अखबारों का चंदा व नियत दान भी मिला।

उस दिन खुशी के मौके पर सैंकड़ों लोगों के लिए बहुत उत्तम भोजन और खीर तैयार की गई। खेड़ा साहिब के पास से एक खास प्रकार का मिष्ठान्न भी दो बार प्राप्त किया गया।

आखिर में सभापति जी ने सभा में धन्यवाद दिया, खास कर गुरू महाराज के हजूर में बार बार शीश झुकाया जिसके सदके यह खास सत्संग और अवसर बहुत सफल हुआ और आत्मा के लिए अच्छा हितकर प्रमाणित हुआ।

चार बार जय ध्वनि के साथ यह सत्संग सम्पन्न हुआ। बाहर से आए पार्टियों के लोग नई सुन्दर पुस्तकों का प्रसाद लेकर जल्दी से विदा हो गए।

श्रद्धांजलि सभा

14 फरवरी साढ़े ग्यारह बजे भुच्चो मंडी बाबू धर्म रत्न जी और उनकी धर्म पत्नी जी को श्रद्धांजलि देने के लिए श्रीमान सुभाष जी ने अपने यहां एक सभा रखवाई। इस में मंडी में से 100 के करीब स्त्री पुरुष आकर शामिल हुए। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने व श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। अर्चन देव स्तोत्र के गान के बाद बाबू धर्म रत्न जी के सद्गुण चिंतन किए गए। उनके गुरु की समाज के प्रति अथाह सेवाओं और लगन का सुन्दर पैरे में वर्णन किया गया। गुरु महाराज की महिमा को सभापति जी ने पेश किया। इस प्रकार यह सभा बहुत प्रभावशाली बन गई। 800 रुपए दान प्राप्त हुआ।

सब हाजरीनों के लिए उत्तम भोजन तैयार करके बांटा गया।

एक सेवक

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts